भारत सरकार

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 6005

01.04.2026 को उत्तर देने के लिए

एसटीईएम विषयों में महिलाओं की भागीदारी

6005. श्रीमती संजना जाटवः

श्री पी. पी. चौधरीः

श्री पी. सी. मोहनः

श्री योगेन्द्र चांदोलियाः

श्री भर्तृहरि महताबः

डॉ. निशिकान्त दुबेः

डॉ. के. सुधाकरः

श्री बिभु प्रसाद तराईः

क्या **विज्ञान और प्रौद्योगिकी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) फरवरी, 2026 तक कर्नाटक और राजस्थान के पाली और भरतपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्रों सहित एसटीईएम विषयों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत कितनी महिला लाभार्थियों को सहायता प्रदान की गई है;

(ख) क्या सरकार ने एसटीईएम विषयों में शिक्षा और अनुसंधान करियर बनाने के लिए लड़कियों और महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए कोई विशेष पहल की है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या कर्नाटक में, विशेषकर बेंगलुरू में एसटीईएम विषयों में महिला अनुसंधानकर्ताओं के लिए परामर्श, प्रशिक्षण या अध्येतावृत्ति कार्यक्रमों के लिए विश्वविद्यालय, अनुसंधान संस्थान और वैज्ञानिक संगठन मंत्रालय के साथ सहयोग कर रहे हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी व्यौरा क्या है;

(घ) सरकार द्वारा एसटीईएम शिक्षा में महिलाओं के नामांकन तथा अनुसंधान और विकास कार्यकलापों में उनकी भागीदारी के बीच के अंतर को पाटने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं; और

(ङ) क्या वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए बेंगलुरू जैसे प्रमुख अनुसंधान केन्द्रों में कोई लक्षित कार्यक्रम या सहायता प्रणाली शुरू की गई हैं?

उत्तर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) सरकार उच्चतर शिक्षा में और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (एसटीईएम) में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के माध्यम से

कई कार्यक्रम कार्यान्वित कर रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाएं-किरण (वाइज़-किरण) जैसी पहलों के माध्यम से पिछले तीन वर्षों में लगभग 1,000 महिला वैज्ञानिकों को सहायता दी है, साथ ही पूरे देश में लगभग 82,813 छात्राओं को भी सहायता दी है (फरवरी 2026 तक)। इस अवधि के दौरान, कर्नाटक में 73 महिला लाभार्थियों और राजस्थान में 24 महिला लाभार्थियों सहित भरतपुर निर्वाचन क्षेत्र एक महिला को वाइज़-किरण के अंतर्गत सहायता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने जैव प्रौद्योगिकी करियर उन्नयन और पुनःअभिविन्यास (बायोकेयर) योजना के माध्यम से कर्नाटक में 49 महिला लाभार्थियों और राजस्थान में 3 महिला लाभार्थियों को सहायता प्रदान की है। इसके अलावा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने नेट जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) के अंतर्गत 21,654 महिला लाभार्थियों और सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले सिंगल गर्ल चाइल्ड फेलोशिप (एसजेएसजीसी) के अंतर्गत 858 लाभार्थियों को सहायता प्रदान की है। यूजीसी "भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में महिलाओं की शिक्षा का विकास" संबंधी योजना जैसी पहलों के माध्यम से, महिलाओं सहित सभी श्रेणियों में उच्च शिक्षा में सुधार को बढ़ावा देता है। इस योजना के अंतर्गत, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में महिला शिक्षा केंद्र (डब्ल्यूएससी) स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जो शिक्षण, अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास, प्रशिक्षण और जनसंपर्क गतिविधियों पर केंद्रित होते हैं।

(ख) मंत्रालय लड़कियों और महिलाओं को एसटीईएम विषयों में शिक्षा और अनुसंधान करियर अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु विशेष पहलें कार्यान्वित कर रहा है। ये पहलें स्कूल शिक्षा से लेकर पोस्ट-डॉक्टरल शोध तक सम्पूर्ण शैक्षिक और पेशेवर श्रृंखला को कवर करती हैं। इनमें विज्ञान ज्योति; वाइज़-डॉक्टरल ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी); वाइज़-पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप (पीडीएफ); वाइज़-बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर); वैज्ञानिक ऊंचाइयों और नवाचार को विकसित और अग्रसर करने के लिए महिलाओं की सहज प्रवृत्ति (विदुषी); और क्यूरी (महिला विश्वविद्यालयों में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए विश्वविद्यालय अनुसंधान का समेकन) जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत छात्रवृत्ति, अध्येतावृत्ति, मार्गदर्शन और प्रशिक्षुता की व्यवस्था शामिल है, जो महिला संस्थानों में अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) अवसंरचना को सुदृढ़ करते हैं। इसके अलावा, डीबीटी बायोकेयर अध्येतावृत्ति के माध्यम से महिलाओं की कैरियर प्रगति के लिए सहायता देता है, जो जैव-प्रौद्योगिकी क्षेत्र में महिलाओं के पुन: प्रवेश और सतत भागीदारी की सुविधा प्रदान करती है।

(ग) कर्नाटक में बेंगलुरू स्थित सहित विश्वविद्यालय, अनुसंधान संस्थान, और वैज्ञानिक संगठन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत मेजबान संस्थान और ज्ञान साझेदार के रूप में सहयोग कर रहे हैं। इनमें भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, रामन अनुसंधान संस्थान, सीएसआईआर-फोर्थ पैराडाइम संस्थान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी

संस्थान सूरतकल, क्राइस्ट (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय), जेएसएस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, निट्टे यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (एनयूसीएसईआर), येनेपोया (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय), स्टेम सेल विज्ञान और पुनर्योजी चिकित्सा संस्थान, मणिपाल पुनर्योजी चिकित्सा संस्थान (एमआईआरएम), तुमकुर विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय अंतरिक्ष-वैमानिकी प्रयोगशालाएं, मंगलौर विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (बेंगलुरु), केंद्रीय विनिर्माण प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएमटीआई), ज्योति निवास कॉलेज, नैनो विज्ञान और इंजीनियरिंग केंद्र, सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतरिक्ष-वैमानिकी प्रयोगशालाएं, जीएसएसएस इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, और कर्नाटक राज्य अक्कामहादेवी महिला विश्वविद्यालय विजयपुर जैसे प्रमुख संस्थान शामिल हैं। ये संस्थान स्टेम(एसटीईएम) क्षेत्रों में महिला शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शन, प्रशिक्षण, अध्येतावृत्ति, अनुसंधान परियोजनाओं और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों हेतु सुविधा प्रदान करते हैं।

(घ) सरकार ने एसटीईएम शिक्षा में महिलाओं के नामांकनों और अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों में उनकी भागीदारी के बीच अंतर को कम करने के लिए कई लक्षित उपाय किए हैं। एक समर्पित कार्यक्रम नामतः वाइज़-किरण कार्यक्रम का उद्देश्य वित्तीय बाधाओं को कम करना और एसटीईएम क्षेत्रों में महिलाओं की निरंतर भागीदारी और करियर प्रगति को प्रोत्साहित करना है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से शिक्षा से अनुसंधान के क्षेत्र में संक्रमण की प्रक्रिया को परिष्कृत एवं सुव्यवस्थित समर्थन तंत्रों के माध्यम से सहज बनाता है। इसके अलावा, महिलाओं की शिक्षा और अनुसंधान में निरंतरता को सुगम बनाने के लिए करियर परामर्श, मातृत्व लाभ, सुव्यवस्थित मार्गदर्शन, अनुभवजन्य भ्रमण और रोल मॉडल्स के साथ संवाद जैसे सक्षम प्रावधानों को शामिल किया गया है। ये उपाय पलायन को कम करने और एसटीईएम करियर में महिलाओं की निरंतर भागीदारी को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। इन प्रयासों को सशक्त बनाते हुए, जैव प्रौद्योगिकी विभाग बायोकेयर अध्येतावृत्ति के माध्यम से महिलाओं के करियर में प्रगति में सहायता करता है, जो जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं के पुन: प्रवेश और निरंतर भागीदारी की सुविधा प्रदान करता है।

(ङ) वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार में महिला सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए बेंगलुरु जैसे प्रमुख अनुसंधान केंद्रों में समर्पित कार्यक्रमों और समर्थन तंत्रों की शुरुआत की गई है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) की राष्ट्रीय स्तर की पहलें, जैसे विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाएं- किरण (वाइज़-किरण) कार्यक्रम, विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रमुख क्रियाकलाप के रूप में कार्य करती हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, विगत तीन वर्षों में बेंगलुरु में 38 महिला वैज्ञानिकों को सहायता प्रदान की गई है। इसके अलावा, डीएसटी ने बेंगलुरु में स्टार्टअप्स को संपूर्ण सहायता प्रदान करने के लिए 11 इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किए हैं, ताकि

उन्हें विचार से लेकर व्यावसायीकरण तक प्रगति करने में मदद मिल सके। राष्ट्रीय नवाचार विकास और दोहन पहल (निधि)- युवा और महत्वाकांक्षी नवप्रवर्तकों एवं स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन एवं गति प्रदान करना (प्रयास) कार्यक्रम के अंतर्गत, बेंगलुरु में 63 महिला नवप्रवर्तकों और स्टार्टअप्स को सहायता दी गई है। इसके अलावा, जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने अपने जैव प्रौद्योगिकी करियर उन्नयन और पुनःअभिविन्यास (बायोकेयर) पहल के माध्यम से बेंगलुरु में 13 महिलाओं को सहायता प्रदान की है। ये महिला-केंद्रित कार्यक्रम प्रमुख शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से कार्यान्वित किए जाते हैं, जो अध्येतावृत्ति, मार्गदर्शन, क्षमता निर्माण, अवसंरचना सहायता और कैरियर उन्नति के अवसर प्रदान करते हैं। सामूहिक रूप से, ये वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

*****